Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JUNE-JULY, 2019, VOL- 7/34

सम्राट अशोक के शिक्षा दर्शन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

श्रीमती रजनी बाला[1], Ph. D. & प्रियंका[2]

एम.ऐ.राजनीति शस्त्रएम.एड.विद्यार्थी, रामगढ़िया कालेज आफ एजुकेशन, फगवाड़ा

एम.एड. पीएचडी. शोध विद्वान, रामगढ़िया कालेज आफ एजुकेशन, फगवाड़ा

rb_rce@yahoo.com, Priyanka.bhanot20@gmail.com

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

संक्षेप

मनुष्यकी अज्ञान्ता के बारे में रविदास जी के अनुसार- ‘‘माधो आबिदया हित कीन बिबेक दीप मालिन।’’

यह विषय दर्शन और ऐतिहासिक अध्ययन वाला विषय है। यह अध्ययन पहलें और दूसरे दरजे के मुख्य स्त्रोत पर आधारित होगा। पहले दरजे में उनके द्वारा दिया गया साहित्य होगा। दूसरे दरजे में औरों लेखकों द्वारा लिखी किताबें, जो कि अशोक सम्राट जी के साथ संबंधित होगी, को शामिल किया जाएंगा। यह पुस्तकालय काम है। इस में सम्राट अशोक के जीवन और उनके महान कार्यों के वारे मे वताया गया है।

जान पहचान

मनुष्यकी अज्ञान्ता के बारे में रविदास जी के अनुसार- ‘‘माधो आबिदया हित कीन बिबेक दीप मालिन।’’

गुरुनानक देव जी ने शिक्षा के लिए ‘विद्या’ शब्द का उपयोग किया-‘‘विद्या वीचारी ता परोपकारी’’ उन्होंने विद्या शब्द का प्रयोग अध्यात्मक भावना के अर्थ के रुप में किया है।

डॉ. भीमरायो अम्बेडकर के अनुसार-‘‘शिक्षा मनुष्यको अपने दोस्त और दुश्मन की पहचान कराती है। शिक्षा वह अस्त्र है जो सामाजिक गुलामी को खत्म करता है और अपने दोस्त और दुश्मन की पहचान कराती है। शिक्षा के साथ मनुष्य अपने सामाजिक क्षेत्र को ऊपर उठाने के लिए आर्थिक प्रगति, राजनीतिक और स्वतन्त्रता को उच्चा उठाना होता है, शिक्षा वह हैं जो सामाज मे परिवर्तन लाने में सहायक हो।’’

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

महात्माबुद्ध के अनुसार-'शिक्षा मनुष्य के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि यह मनुष्य को सोचने समझने की शक्ति प्रधान करती है और इसे तर्कवादी बनाती है और जो शिक्षा तर्क पर आधारित न हो वह बेअर्थ है।"

ज्योतिबा फुले के अनुसार-"विद्या बिना मत गई,

मत बिना गति गई,

गति बिना नीति गई,

नीति बिना शुद्र धवस्त हुए।"

यह सब अनर्थ एक अविद्या के साथ हुआ है।

सम्राट अशोक का जीवन

आदर्शवादी तथा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन सम्राट अशोक ने मौर्य साम्राज्य के शासक बिन्दुसार और माता सुभद्रांगी के बेटे के रुप में 304 ईसा पूर्व चैत्र मास मे शुक्ल पक्ष की अष्टमी को जन्म लिया। इनके दादा मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य थे।

सम्राट अशोक का पूरा नाम

अशोक सम्राट का पूरा नाम **अशोक बर्धन मौर्य**था। अशोक का अर्थ है- **बिना शोक का यानि जिसे कोई दु:ख न हो, न कोईपीडा हो।**

सम्राट अशोक का विवाह

सम्राट अशोक का विवाह देवी असंधिनिता से हुआ।

संतान

सम्राट अशोक की दो संतानों का जिक्र हुआ है। इनके पुत्र का नाम महिदा और पुत्री संघमिता थे,जिन्होने बौद्ध धम्म अपनाया था।

महिदा- सम्राटअशोक के परिवार में और राज्य में बौद्ध धम्म का प्रभाव इतना अधिक बड़ गया था कि 21 वर्ष की आयु में ही महिदा ने महाथेर महादेव से प्रवाज्य ग्रहण कर ली थी।

संघमिता- संघमिता ने सम्राट अशोक की आज्ञा से बौद्ध धम्म को अपना लिया।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

राज्याभिषेक

सम्राट अशोक सन 273 ईसा पूर्व के लगभग 34 वर्ष की आयु में मगध के राज-सिंहासन पर आसीन हुए थे।

चर्चित एवं लोकप्रिय शासक

सम्राट अशोक भारत के सर्वाधिक चर्चित एवं लोकप्रिय शासक थे। उन्होंने तलवार और युद्ध के कारण नहीं, कुटिलता व वक्रनीति के कारण भी नहीं,अपितु अपनी करुणा, उदारता एवं मानवीयता के कारण दुनिया भर में ख्याति अर्चित की थी।

सम्राट अशोक का व्यक्तित्व

सम्राट अशोक का चरित्र अत्यंत उदात एवं शीलपरायण था।

एक कुशल राजनीतिक

सम्राट अशोक एक कुशल राजनीतिक थे। एक बार उज्जैन और तक्षशिला में अपने कुशल राजनीतिक व्यवहार के कारण वहा की जनता को अपनेप्यार में मोहित कर लिया।सम्राट अशोक एक कुशल राजनीतिक थे। उन्होने वहां की जनता की भावनाओं का सामान किया और थोड़े दिनो मे सबका मन जीत कर शान्ति स्थापित की।

कलिंग का अन्तिम युद्ध

इस युद्ध में कलिंग का राजा हार गया और अशोक को विजय प्राप्त हुई।पर इस युद्धमें 1 लाख लोग मारे गए थे। बच्चें, बूढ़ें, औरतें, इन सब की रोने की आवाज से कलिंग गूंज रहा था। खुन की नदियां चारों तरफ बह रही थी। यह युद्ध इतिहास के पन्नों पर सबसे ऊपर अंकित है। किन्तु कलिंग के युद्ध की हृदय-विदारक हिंसा और नरसंहार की घटना का अशोक के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा और यह युद्ध अशोक सम्राट का अन्तिम युद्ध सिद्ध हुआ।

बौद्ध भिक्खु का चमत्कार

प्रज्ञावान भिक्खु ने सम्राट अशोक के हृदय की बंजर भूमि में करुणा, मैत्री और मानवता के बीज बो दिए। अत: कहा जा सकता है कि उस महान भिक्खु की फटकार एवं चमत्कार के बिना यदि सम्राट अशोक कलिंग यद्ध में मरने वालों की लाशें देखता तो शायद उसे रण-कौशल पर गर्व होता। सम्राट के व्यग्र मन में अहिंसा,करुणा और मैत्री के भाव उपजे तो इसके पीछे

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उस भिक्खु के चमत्कार और फटकार की ही शक्ति थी। इसके बाद सदैव उन्होने कभी तलवार न उठाने की कसम कसम खाई।

शस्त्रत्याग

इस तरह सम्राट अशोक का कलिंग युद्ध उनके जीवन का अन्तिम युद्ध साबित हुआ। उन्होंने निर्णय लिया, कि शत्रु को हिंसा से नहीं प्रेम से जीता जा सकता है। इस लिए उन्होंने सम्पूर्ण जीवन शस्त्र न उठाने का प्रण लिया।

बौद्ध धम्म में परिवर्तन

इस तरह सम्राट अशोक कलिंग के यद्ध के बाद बौद्ध धम्म मे परिवर्तित हो गए और उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन बौद्ध धम्म के विकास और इसके उद्देश्य को आम लोगों तक पहुँचाने में लगा दिया। इस कइ प्रचार-प्रसार विश्व में करने मे सफल रहे।

बौद्ध धम्म के उद्देश्य

महामानव बुद्ध द्वारा स्थापित किया गया धम्म है। इस धम्म की प्रमुख विशोषता है कि यह लोगों को जीवन जीने के मार्ग दिखाने के साथ उसे अपने मतोंद्वारा प्रतिपादित भी करता है। बौद्ध धम्म को हम धर्म इसलिए नहीं कहतें क्योकि ये अन्य धर्मो की तरह आस्था, गुटबाजी, पुरोहितवाद, ईश्वरवाद और उनसे जुडी मान्यताओं पर नहीं चलता। इनका लक्ष्य मानव में ऐसे मानसिक योग्यता पैदा करना है जिसमें वो असत्य को पहचान और नकार सके, सत्य और प्रमाणिकता के बिना कुछ स्वीकार न सके, ईश्वरवाद रूपी शोषक और पुरोहित पालक सिधांत का बहिष्कार कर सके, परिणाम स्वरूप अपने वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से दुखों का कारण जानकर निरंतर निवारण कर सके। महामानव बुद्ध ने अपने अनुयायीओं को चार आर्यसत्य, अष्टांगिक मार्ग, दस पारमिता, पंचशील आदि शिक्षाओं को प्रदान किया है।

बौद्ध धम्म के चार आर्य सत्य:-

चार आर्य सत्य ही बौद्ध ध म्म की शिक्षाओं का मुख्य केन्द्र है। इन चार सत्यों को समझ पाना बेह द आसान है। यह मानव जीवन से जुड़े बेहद आम बातें हैं

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जिनके पीछे छुपे गूढ़ रहस्यों को हम कभी समझ नहीं पाते। यह चार सत्य निम्न हैं:

*** दुख: जीवन का अर्थ ही दुख है। जन्म लेने से लेकर मृत्यु तक मनुष्य को कई चरणों में दुख भोगना पड़ता है।**

*** दुख का कारण चाहत: मनुष्य के सभी दुखों का कारण उसका कार्य, व्यक्ति या मोह के प्रति लगाव या चाहत ही है।**

*** दुखों का अंत संभव है : कई बार मनुष्य अपने दुखों से इतना परेशान हो जाता है कि आत्म हत्या जैसे कदम भी उठा लेता है। मनुष्य को यह समझना चाहिए कि उसके दुखों का अंत संभव है।**

*** दुखों के निवारण का मार्ग: अष्टांगिक मार्ग ही मनुष्य के समस्त दुखों के निवारण का मार्ग है। इस मार्ग पर चल मनुष्य अपने समस्त दुखों से पार पा सकता है।**

अशोक सम्राट के महत्वपूर्ण कार्य:-

1. **धम्म अभिलेख और स्तंभ अभिलेख-:** सम्राट अशोक के धम्म प्रचार की शैली बहुत विशिष्ट रही। उन्होंने धम्म प्रसार का महान कार्य पत्थरों के माध्यम से किया। उन्होंने पत्थरों के स्तंभ, शिलालेख, चैत्य, स्तूप आदि बनवा कर इतिहास में अपना नाम अमर किया। सम्राट अशोक के धम्म-अभिलेख भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक पाए जाते हैं। अभी तक 50 धम्म अभिलेखों की खोज हो चुकी है। इन धम्मअभिलेखों का वर्णन इस प्रकार किया गया है-:

1 शिलालेख 2 स्तंभलेख 3 गुहालेख

उनके कुछ स्तंभलेखों का वर्णन निम्न लिखित है-:

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

*** प्रथम स्तंभलेख-** "राज्यभिषेक के 26 वर्ष बाद मैने यह धर्मलेख लिखवाया। एकांत धर्मानुराग, विर्शष स्व-परीक्षा, बड़ी शुश्रषा, बड़े भव और महान उत्साह के बिना ऐहिक और पारलौकिक दोनों उद्देश्य दुर्लभ है। पर मेरी शिक्षा से लोगों का धर्म के प्रति आदर और अनुराग दिन-प्रतिदिन बड़ा है और आगे बढ़ेगा। मेरे पुरूष चाहे उच्च पद पर हो या निम्न पद पर अथवा माध्यम पद पर, मेरी शिक्षा के अनुसार काम करते है और ऐसे उपाय करते है कि चंचमथि लोग भी धर्म का आचरण करे। इसी तरह अंतमहामात्र भी आचरण करते है। धर्म के अनुसार पालन करना, धर्म के अनुसार सु:ख देना और धर्म के अनुसार रक्षा करना यही धर्म है।"

*** द्वितीय स्तंभलेख-** "धम्म है साधुता बहुत से कल्याणकारी अच्छे कार्य करना, पापरहित होना, मृदता, दूसरों के प्रति व्यवहार मे मधुरता, दया-दान तथा शुचिता" आगे कहा गया है कि, " प्राणियों का वध न करना, जीवहिंसा न करना, माता-पिता तथा बड़ों की आज्ञा का पालन करना, गुरुजनों के प्रति आदर, मित्रा, परिचितों, सम्बन्धियों, श्रवणों के प्रति दानशीलता तथा उचित व्यवहार और सेवक तथा भृत्यों के प्रति व्यवहार। ब्रद्मगिरि शिलालेख में इन गुणों के अतिरिक्त शिष्यों द्वारा गुरु का आदर भी धम्म के अन्तर्गत माना गया है।" उनका स्तंभलेखों, धम्मलेखो को लिखवाने का उद्देश्य बौद्ध धम्म का अधिक से अधिक विकास करना था।

2. पशु-पक्षियों की बलि पर रोक:-अशोक सम्राट ने पशु-पक्षियों की बलि पर रोक लगवाई, न पशु-पक्षी मार कर उनका हवन किया जाए, न उनकी बलि दी जाए और न ऐसे उत्सव मनाए जाए जाए जो आदमी की इन्द्रिय-लोलुप बनाए, सम्राट ने अपनी रसोई में पशु-पक्षी मारने को जल्दी बंद करने का आश्वासन दिया।

. इध न किंचि जीव आरभित्पा प्रजूहितव्यं

अर्थात किसी जीव को मार कर हवन नही किया जाना चाहिय। सम्राट अशोक का यह कार्य सबसे महान माना गया है।

3. पशु-पक्षियों के लिए चिकित्सालय:- अशोक सम्राट ने पशु-पक्षियों के लिए चिकित्सालयों का निमार्ण कराया। उन में उपयोगी औषधियां मंगवाई जाती थी। उन्होंने उस समय पशु-

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पक्षियों के लिए चिकित्सालय बनवाऐ थे, उन से बड़ा कोई राजा नहीं हुआ जिन्होने पशुऔ के बारे मे इतना सोचा होगा।

4. सड़कों पर वृक्ष और कुएं खुदवाए:-अशोक सम्राट ऐसे पहले राजा हुए है जिन्होने राज्य मार्ग पर फलदार वृक्ष लगवाए ताकि यो यात्रा कर रहे लोग और काम करने वाले खा सके और वृक्ष के नीचे बैठ कर आराम कर सके। इस के साथ-साथ उन्होंने राज्यमार्ग पर जगह-जगह पर कुए खुदवाए। यह सब कुछ उन्होंने आम जनता के लिए किया ताकि उन्हें कोई कष्ट न हो।

5. धर्मशालाओं का निर्माण:-वो पहले सम्राट थे, जिन्होने ये किया था। उन्होंने धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। यह धर्मशलाएं सम्राट जी की देन है।उन्होंने इन का निर्माण आम जनता को ध्यान मे रख कर किया ताकि यात्रा करने वालो को कोई असुविधा न हो। सम्राट अशोक ऐसे पहले राजा है जिन्होने अपने से ज्यादा प्रजा के बारे मे सोचा।

6. पत्थरों को जुबान देने वाले:-सम्राट जी ने लकड़ी, बांस, ईट, धातु तथा मिट्ठी का प्रयोग न करके विशाल शिल्प के लिए सर्वश्रेष्ठ साम्रगी के रूप में पत्थरों का उपयोग एवं चटानों मे नक्शकारी करानी प्रारम्भ की। मौर्य स्तम्भ इसी साम्रगी से बने है। उन्होंने केवल बौद्ध प्रतीकों- सिंह, वृषभ, हाथी, घोड़ों, धम्मचक्र को उकेरा बलिक अपने धम्म के वचनों को भी धम्मलिपि में खुदवाया। इस तरह सम्राट ने अपने समय मे पत्थरों को जुबान दी।

7. धम्मलिपि की भाषा आज की राष्ट्रभाषा:-उन्होंने धम्मलिपि को उस समय की जन भाषा में लिखवाया। उस समय की जन भाषा ब्राह्मी लिपि है। जो आज हमारी राष्ट्रलिपि देवनागरी है। अशोक जी की इच्छा थी कि इन धम्म अभिलेखों को अधिक से अधिक लोग पढें और अपने जीवन में इन पर अंकित बातों का अनुशीलन करे। इसलिए उन्होंने अपने साम्राज्य में जनलिपि को ही माध्यम बनाया।

8. राष्ट्रीय चिन्ह अशोक सम्राट की देन:- सम्राट अशोक की भारत के राष्ट्रीय चरित्र पर धम्म प्रचार की स्पष्ट रूप से अमिट छाप अंकित कर दी है। आज भी भारत में राष्ट्रीय धवज एवं राजमुद्रा आदि पर सम्राट अशोक की उपस्थिति से यह तथ्य स्वयं ही सिद्ध हो जाता है। इसी तरह 24 आरे वाले चक्र को हम धम्मचक्रऔर सरकारी भाषा में अशोकचक्र कहते है। यहचक्रएक गाड़ी का पहिया है, गाड़ी तब आगे बढती है,जबचक्रका ऊपरी भाग निचली और तथा नीचे का

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भाग ऊपर की और जाता है। इसी के साथ कुछ दुरी तय हो जाती है, इसी कारण विकास का प्रतीक भी माना जाता है।उन्होंने गर्जना करते चार शेरों की प्रतिमा भी स्थापित करवाई, इसे भी आज भारत का राष्ट्रचिन्ह माना जाता है। इस पर भी एक कथा है कि बौद्ध धम्म मे शेरों को बुद्ध का प्रयाय माना गया है। भगवान के पर्यायवाची शब्दों मे शाक्य सिंह और नरसिंह का द्योतक माना गया है। यही कारण है कि सम्राट अशोक ने शोर को अपने राज्य चिन्ह के रूप में चुना। इस तरह आज सम्राट जी के चिन्हों को हमारे राष्ट्रीय चिन्हों के रूप मे माना जाता है।

9. विश्वविद्यालयों की स्थापना:-सम्राट अशोक ने अपने समय मे 23 विश्वविद्यालयों की स्थापना करवाई। इन विश्वविद्यालयों में प्रमुख *तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय, कंधार विश्वविद्यालय, सुमपुरी विश्वविद्यालय, पंडितबिहार विश्वविद्यालय* आदि। इन विश्वविद्यालयों में बाहर से भी छात्र पढने के लिए आते थे। सम्राट अशोक इन विश्वविद्यालयों को फर्स्ट एड किट देते थे।

***तक्षशिला विश्वविद्यालय-**

भारत में तक्षशिला नगरी विद्या और शिक्षा के महान केंद्र के रूप मे प्रसिद्ध थी। बौद्धयुग में तो यह विद्या का सर्वमुख्य क्षेत्र थी। तक्षशिलामेंप्राय- उच्चस्तरीय विद्याएँ ही पढ़ाई जाती थीं और दूर-दूरसे आनेवाले बालक निश्चयही किशोरावस्था के हो तेथे जो प्रारंभिक शिक्षा पहले ही प्राप्तकर चुके हो तेथे। वहाँ के पाठयक्रम में आयुर्वेद, धनुर्वेद, हस्तिविद्या, त्रयी, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, गणित, ज्योतिष, गणना, संख्यानक, वाणिज्य, सर्पविद्या, तंत्रशास्त्र, संगीत, नृत्य और चित्रकला आदि का मुख्य स्थान था।

*** नालंदा विश्वविद्यालय-**

यह प्राचीन भारत में उच्च शिक्षाका सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। महायान बौद्धधम्म के इस शिक्षा-केन्द्र में ही नयान, बौद्ध-धम्म के साथ ही अन्य धर्मोके तथा अनेक देशों के छात्र पढ़ तेथे। कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा के विशिष्ट शिक्षाप्राप्त स्ना तक बाहर जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी।

*** विक्रमशिला विश्वविद्यालय-**

यहाँ बौद्धधर्म और दर्शन के अतिरिक्त न्याय, तत्त्वज्ञान, व्याकरण आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती थीं तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान विद्वान आचार्योंद्वारा कियाजा ता था। यहाँ देश से ही

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नहीं विदेशोंसे भी विद्याध्ययनके लिए छात्र आतेथे। शिक्षा समाप्तिके बाद विद्यार्थीको उपाधिप्राप्त होती थी जो उसके विषय की दक्षता का प्रमाणमानी जाती थी। पूर्वमध्ययुग में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के अतिरिक्त कोई शिक्षा केन्द्र इतना महत्त्वपूर्ण नहीं था कि सुदूर प्रान्तोंके विद्यार्थी जहाँ विद्या अध्ययन के लिए जाएँ। इसीलिए यहाँ छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी। यहाँ के अध्यापकों की संख्याही ३००० के लगभग थी अतःविद्यार्थियों के अनेकानेक विद्वानोंने विभिन्न ग्रंथों की रचना की, जिनका बौद्धसाहित्य और इतिहास में नाम है। इनविद्वानों में कुछ प्रसिद्ध नाम हैं– रक्षित, विरोचन, ज्ञानपाद, बुद्ध, जे तारि रत्नाकर शान्ति, रत्नवज्र और अभयंकर। दीपंकरनामक विद्वानने लगभग २०० ग्रंथोंकी रचना की थी। वह इस शिक्षा केन्द्रके महान प्रतिभाशाली विद्वानोंमें से एक थे। अब इस विश्वविद्यालय के केवल खण्ड हर ही अवशेष हैं।

10. बौद्धधम्म का विश्व प्रचार:- अशौक सम्राट जी ने अपने जीवन में बौद्ध धम्म के विचारों को अपनाया और इसका प्रचार-प्रसार पूरे विश्व में किया। इन्होंने अपने पुत्र और पुत्री को श्रीलंका में बौद्ध धम्म के प्रचार के लिए भेजा। उन्होने महामानव बौद्ध की शिक्षा को पूरे संसार के लोगों तक पहुँचाया।बुद्ध धम्म की महानता का मूल्यांकन करके सम्राट अशोक ने इसे अपना कर दुनिया में प्रचार-प्रसार किया। महामानव बुद्ध ने**पंचशील,अष्टांग मार्ग, चार आर्य सत्य, बुद्ध के पाँच उपदेश,**आदि का विश्व प्रचार किया।

महामानव बुद्ध और उनके पंचशील के सिद्धांत :-

महामनव बुद्ध का सारा साहित्य और वाणी पंचशील के नैतिकता के पाँच मुख्य सिद्धांतो पर आधारित है। मनुष्य के जीवन में पंचशील के नैतिक मुल्य बहुत महत्व रखते है। हमारे सामाजिक जीवन में पंचशील के नियमों का पालन करना और अपने अधिकारों और कर्तव्यों में एक उच्च दरजें का तालमेल होना बहुत महत्वपूर्ण है। इन के बिना हमारा सामाजिक जीवन अपने मार्ग से भटक जाएगा। इसलिए पंचशील का सिद्धांत नैतिक मुल्यों का मार्ग दर्शन करता है। उनका पंचशील इस प्रकार है–

1. पाणातिपातावेरमणीसिक्खापदंसमादयामि।
2. अदिन्नादानावेरमणीसिक्खापदंसमादयामि।।
3. कामेसुमिच्छाचारावेरमणीसिक्खापदंसमादयामि।।
4. मुसावादावेरमणीसिक्खापदंसमादयामि।।
5. सुरा–मेरय–मज्ज–पमादट्ठानावेरमणीसिक्खापदंसमादयामि।।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अर्थ:-

1. मैं जीव हत्या न करने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

2. मैं चोरी न करने की शिक्षा ग्रहण कतरा हूँ।

3. मैं लैंगिक दुराचार या व्यविचार से रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

4. मैं असत्य बोलने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

5. मैं सुरा (शराब), मद्य और नशीली चीजों के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

महामानव बुद्ध का विचार था कि पाप का पछतावा करने से अच्छा है कि पाप न किया जाए। प्रमात्मा विश्वास की चीज है। इसलिए बुद्धधम्म पवित्र आचरण की चीज है। इसलिए बुद्ध धम्म का प्रमात्मा से कोई संबंध नही है। घृणा बुरे व्यक्ती से नहीं बल्कि उसकी बुराई के साथ करनी चाहिए। दान देने के बाद पछचाताप नही बल्कि सु:ख का अनुभव होता है। संसार में धम्म ही सबसे उत्म है।इस जन्म मे भी और जन्म के बाद भी जो जरुरत पड़ने पर हमारी सहायता करता है। वही सबसे अच्छा मित्र है।

जीवन में मनुष्य ने जो सु:ख लेना

पंचशील के मार्ग को पहले समझे

ज्ञान के साथ दुखों को मुक्त करे

इसके साथ जीवन में आनंद मिल पाएगा।

महामानव बुद्ध का विचार था कि अगर मनुष्य मोज मस्ती, भोग विलास और काम वासना में न फसे, मोज-मस्ती से दूर रह कर ध्यान लगाने से सु:ख-शन्ति की प्राप्ति होती है। संसार में ऐसा कोई नही जो हिंसा की प्रेरणा न देता हो। आप ऐसा न करे। हम अज्ञानी लोग शान्ति की बात करते है। पर शत्रुता खत्म करने को तैयार नहीं। जब कि शत्रुता ही सुख-शन्ति का सबसे बड़ा दुश्मन है। आचरण, विचार, और संगत मनुष्य को नीच या अच्छा बनाती है। भौतिक सुख के लिए कभी ऐसा काम नही करना चाहिए जिस से माता-पिता के आदर सतिकार और उनके समान को ठेस लगे। इस तरह करने से व्यक्ती अपना आदर खो बैठता है। इसके बाद उसे जीवन में आनंद की प्राप्ती नही होती। पंचशील के मार्ग पर चल कर जीवन सफल हो जाएगा।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

11. बौद्धधम्म के अनुयायी :-

महान चक्रवर्ती सम्राट अशोक बौद्ध धर्म के श्रद्धासम्मपन्न अनुयायी महान थे।अपने शिलालेखों में उन्होंने इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि उनका पूरा विश्वास बुद्धधम्म और संघ के प्रति था। इसी पावन भावना के साथ उन्होंने बौद्ध तीर्थों की यात्रा का पंचशील, अष्टांग मार्ग, चार आर्य सत्य, बुद्धकेपाँचउपदेश, विश्व प्रचार किया।

12. इतिहास में अशोक का स्थान:-

अशोक ने लोगों को जियो व जीने दो सिखाया। उन्होने जानवरों से सहानुभूति पर बल दिया। उनकी शिक्षा ने पारिवारिक संस्था तथा वर्तमान सामाजिक वर्ग पर बल दिया। अशोक देश में राजनीतिक एकीकरण लाये। उन्होने इन्हे एक धर्म, एक भाषा, तथा व्यवहारिक दृष्टि से एक लिपि जिसे ब्रद्मी लिपि कहा गया है में सीमित किया।उनके शिलालेख उन्होंने लिखवाए वह सब पालि भाषा में है,जिसको धम्म लिपि में लिखा गया और जिसे आज ब्रद्म लिपि कहा जाता है।

13. सम्राट अशोक के अनमोल विचार:-

* "किसीभी व्यक्तिको सिर्फ अपने धर्म का सम्मान और दूसरों के धर्म की निंदा नहीं करनी चाहिए।"

*"सफल राजा वही होता हैं, जिसे पता होता हैं कि जनता को किस चीज की जरूरत हैं।"

* "सबसे महान जीत प्रेमकी होती है. यह हमेशा के लिए दिल जीत लेती है।"

* "कोई भी व्यक्ति जो चाहे प्राप्त कर सकता हैं, बस उसे उसकी उचित की मत चुकानी होगी।"

* "मैंने कुछ जानवरों और अन्य प्राणियों को मारने के खिलाफ कानून लागू किया है, लेकिन लोगों के बीच धर्म की सबसे बड़ी प्रगति जीवित प्राणियों को चोट न पहुंचाने और उन्हें मारने से बचने का उपदेश देने से आती है।"

* "एक राजासे ही उसकी प्रजा की पहचान होती हैं।"

* "आप नहीं जानते कि मैं किस हद तक यह चाहता हूँ और अगर कुछ लोग समझते भी है तो वे यह नहीं समझते कि मेरी इस इच्छा की पूरी हद क्या है।"

*तीन कार्य जो हमें सदा स्वर्ग की ओर ले जाते हैं, "माता-पिता का सम्मान, सभी जीवो पर दया, और सत्य वचन।"

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

* "जितना कठिन संघर्ष करोगे, आपके जीत कि ख़ुशी भी उतनी ही बढ़ जयेगी।"

* "सभी इन्सान मेरे बच्चे हैं। जो मैं अपने बच्चो के लिए चाहता हूँ, मैं इस दुनिया में और इसके बाद भी उमका भला और ख:शी चाहता हूं, वही मैं इस संसार के लिए चाहता हूँ और अगर कुछ लोग समझते है,तो वे ये नही समझते कि मेरी इस इच्छा की पूरी हद क्या है।"

* "हर धर्म में प्रेम, करुणा और भलाई का पोषक कोर है। बाहरी खोल में अंतर है, लेकिन भीतरी सार को महत्त्व दीजिये और तब वास्तविक शान्ति और सद्भाव आएगा।"

14. सम्राट अशोक का अन्तिम दान:-

सम्राट अशोक जी जैसा महान दानवीर भी इतिहास मे ढूंढ़े नहीं मिलता। एक निष्टावान बौद्ध होने के नाते सम्राट अशोक दान के महत्व को बाखूबी जानते थे। दानवीर सम्राट अशोक ने जीवन भर मुक्त कर से दिल से दान दिया। अपने अन्तिम दिनों में अशोक ने अपना सिंहासन अपने पोत्र संप्रति के हाथ में सौंप दिया। संप्रति राजकुमार जब सिंहासन पर बैठा तब उसने राजकोष को संतोषजनक नहीं पाया।राजकुमार अपेक्षा कर रहे थे कि हमारा खजाना संसार के सब खजानों में श्रेष्ठ होगा। किन्तु राजकुमार को निराश होना पड़ा। यद्यपि यह खजाना इतना कम भी नहीं था। दानवीर अशोक राजकोष को या तो भिक्खुसंग को दान दे चुके थे या जन-कलयाण के कार्यो में लगा चुके थे। यही वजह है कि बौद्ध धर्मावलम्बी होते हुए भी राजकुमार संप्रति ने भिक्खुसंघ को दिया जाने वाला दान बहुत कम कर दिया था। दानवीर अशोक का हाथ तंग था। अब उन्होंने खाने-पीन के प्रयोग में आने वाले सोने-चांदी के बर्तनों को ही दान करना शुरु कर दिया।राजकुमार संप्रति ने तंग आकर आज्ञा दीमहाराजा को मिटटी के बर्तनों मे खाना परोसा जाए। अपने अन्तिम दिनों में उनके पास औषाधि के रूप मे एक आंवला ही शेष बचा था, उसे एक राज्य कर्मचारी के हाथ मे देते हुए माहाराज ने कहा-**'आज जम्बुदीप के स्वामी के रूप मे मेरे पास इस आंवला के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं बचा। जाओ इस आंवले को सम्सत जम्बुदीप के चकवर्ती राजा का अंतिम दान मानकर स्वीकार किया जाए। इसे पूज्य भिक्खुगण आपस मे बांट ले।' भिक्खुओं ने वह आंवला कूटकर आपस मे बांट लिया। यह उनका महान दान माना गया।**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मृत्यु

अशोक ने लगभग 36 वर्षो बाद तक शासन किया और अपना सम्पूर्ण जीवन बौद्ध धम्म के प्रचार प्रसार मे लगा दिया। उनकी मृत्यु लगभग 232 ई.पूर्व को हो गई। सम्राट अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य राजवंश लगभग 50 वर्षो तर ही चल पाया।

सम्राट अशोक और भारत का संविधान

- डा.बी आर आम्बेडकर जी के द्वारा भारतीय संविधान में अशोक जी के द्वारा बताई बातों को आधार बनाया गया जैसे–

अशोक चक्र सम्राट अशोक द्वारा दिया गया है, उन्होने भारत के राष्ट्र को प्रकट करने वाले चार शेरों बाली मूर्त को भी सम्राट अशोक के शिलालेखों से लिया था। डा. आम्बेडकर जी सम्राट अशोक से काफी प्रभावित थे।

- हमारे देश के संविधान का निर्मण डा. आम्बेडकर जी द्वारा किया गया है। आम्बडेकर जी सम्राट अशोक के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थे। सम्राट अशोक ने अपने जीवन में बड़ों का आदर, हर किसी को न्याय मिले, शिक्षा का अधिकार सबको हो, जाति–पाति के आधार पर किसी से कोई भेदभाव न हो, विचारों को प्रकट करने की आजादी सबकों है, आदि इन सब बातों पर जोर दिया था। आम्बेडकर जी ने सम्राट की इन बातों को अपने संविधान का आधार बनाया। इस लिए भारत के संविधान में जो प्रस्तावना हैं वह सम्राट अशोक की विचारधारा पर आधारित है। डा. बी.आर. आम्बेडकर द्वारा दी गई प्रस्तावना इस प्रकार है–

" हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न, सामाजवादी, पंथनिपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए उसके सम्सत नागरिकों को:

सामाजिक,आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित कराने वाली बंधुता बढाने के लिए दृढ़ संकल्प लेते है और संविधान को अंगीकृत, अधिनियनित और आत्मार्पित करते है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सम्राट अशोक का राज्य सिकंदर के राज्य से भी बड़ा था–

भारत में सिकंदर के राज्य को सबसे बड़ा राज्य कहा जाता है, पर सम्राट अशोक का राज्य उनसे भी बड़ा था। एक ऐसा राजा जिसने सर्वप्रथम खंडित और मूर्छित भारत को सुदृढ और अखंड बनाया, जिस राजा का अशोक चक्र भारतीय ध्वज की शोभा बढ़ाता है, जिस राजा के चहुंमुखी सिंह भारतीय मुद्रा की पहचान करवाता है, भारत सरकार को प्रमाणित करता है। जिस राजा का अशोक स्तम्भ से स्तय मेव जयते प्रदत्त होता हो, यानि सच्चाई की हमेशा जीत होती है। उस राजा को आज कोई याद ही नहीं करता। जिस राजा ने युद्ध में विज्य प्राप्त कर अहिंसा का मार्ग अपना लिया और बुद्ध धम्म का विश्व प्रसार करने में अपना स्मपूर्ण जीवन लगा दिया। उस महान राजा को आज कोई याद ही नहीं करता।उस महान राजा ने अपना समपूर्ण जीवन लोगों की भलाई, पशु–पक्षियों की रक्षा, बौद्ध धम्म के उपदेशों को आम लोगों तक पहुंचाने के लिए अनेक कार्य किए।

एस तरह जिस राजा ने देश को अपना सब कुछ त्याग दिया। उस राजा का कोई वर्णन नही करता। इनके बाद कोई राजा इतना सशक्त और महान नही हुआ। लेकिन भारत ने उनको भुला ही दिया। लेकिन उनकी कार्य क्षमता, नीति, सोच, विचार और सबकुछ जानने की फिर से आवश्यकता है। तात्कालिन अखंड भारत अब मुमकिन नही लेकिन आधुनिक प्रबुद्ध, सदृढ़ भारत सम्राट अशोक के सिद्धांतों से ही सम्भव है।

सम्राट अशोक ने सर्वप्रथम खंडित और मूर्छित भारत को सुदृढ और अखंड बनाया–

सम्राट अशोक ने सबसे पहले भारत को सुदृढ और अखंड बनाया था। उन्होने भारत को बौद्ध धम्म के उपदेश दिए। जिस के रास्ते पर चल कर भारत अखंड राज्य बना।

इस तरह अशोक जी ने अपने जीवन में बहुत से कल्याणकारी कार्य किए है। शिक्षा के उद्देश्य अशोक सम्राट की विचारधारा पर आधारित है।

शिक्षा के उद्देश्य

सामाजिक समान्ता का अधिकार होना चाहिए। शिक्षा तर्क पर आधारित होनी चाहिए। जीवन में मूल्यों के बारे मे सोचना चाहिए। मनुष्य के जीवन मे शिक्षा पाखंड़ के बिना होनी चाहिए।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शिक्षा में धार्मिक कट्टरपंथी नहीं होनी चाहिए। शिक्षा मानव के मूल्यों का मान करती है। सम्राट अशोक के जीवन में उजागर हुए चरित्र को भारत के युवा शत्रों के जीवन के साथ संबंध बनाना। अहिंसा के मार्ग पर चलना। शिक्षा का नैतिक जीवन के साथ संबंधित होना।उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति को पशु-पक्षियों से प्रेम करना सिखाए।शिक्षा हमें वातावाण को स्वच्छ रखना सिखाती है। शिक्षा हमें बड़ों का आधर करना सिखाती है।यह हमें अहिंसा का मार्ग दिखाती है। शिक्षा हमें धर्मनिरपेक्ष का मार्ग दिखाती।

पुस्तावली

बौद्ध, शन्ति स्वरूप (2010), "सम्राट अशोक सचित्र जीवनी" प्रकाशन: सन्यक प्रकाशन,पश्चिम पुरी(नई दिल्ली)-110063-08

बौद्ध, आचार्य.जुगल किशोर.(2010), 'अशोककालीन दीपदानोत्सव,जो दीवाली बन गया' सम्यक प्रकाशन 32/3, नई दिल्ली।

डा. सुरेन्द्र अज्ञात (2008), "सम्राट अशोक के शिलालेख व बुद्ध धम्म" भीम पत्रिका पब्लिकेशंज, जालन्धर-144003 (भारत)

डा. प्रदीप शालिग्राम मेश्राम,धीरज यादवराव चौधरी(2013), " महान सम्राट अशोक के खरोष्ठी, आटमेक और ग्रीक अभिलेख" प्रकाशन:सम्यक प्रकाशन 32/3, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली-110063

मधुकर पिपलायन(2012), "महान सम्राट अशोक"सम्यक,प्रकाशन, पश्चिमपुरी, (नई दिल्ली)

आर.के सिंह, श्याम सुन्दर दास(2016),"अशोक के राष्ट्रीय चिन्ह और धर्मनिरपेक्ष भारत" प्रकाशन:सम्यक 32/3 पश्चिमपुरी,नई दिल्ली

बौद्ध,मनोहर.(2013), " राज से गुलामी तक" प्रकाशन: नंना प्रकाशन प्रैस, अलकपुर रोड़ फिलौर.

आपटे,वासुदेव गोविंद (2007), "सम्राट अशोक चरित्र" प्रकाशन: वरदा, सेनापति मार्ग पुणे 397/1

आग्यराम शाक्य(2018), अशोक सम्राट का इतिहास" राजमंगल प्रकाशन,पटना।

भंटट,अकिंत(2016), 'आज का समय और अशोक के समय का युग'राजमंगल प्रकाशन पटना 202001

पिपलायन,मधुकर (2003), 'महान अशोक सम्राट'प्रथम संसमरण,प्रकाल्शन सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली-63।

आम्बेडकर, डा.बी.आर(2010), 'बुद्ध और उनका धम्म' बहुजन हित प्रकाशन, नई दिल्ली।

सितम.डा. सूर्य.मल(2010), "भगवान बुद्ध के अमर संदेश" प्रीत प्रकाशन, जालंधर।

वर्मा,संगिता (2002), 'भारत के निर्माता अशोक' प्रकाशन: Bee key press

Web- W.W.W. chakravartin Ashoka Samrat.com

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

W.W.W.deepawali.co.in/Samrat ashok.com

Sidhu, Kulvir Singh (1984), Methodology of Research in Education. Star Publication

Dr. Khan.J.A (2011) Research Methodology, A.P.M Publication Corporation

चन्द,एम.एम (2003) 'महानायक सम्राट अशोक' विकास प्रकाशन।

कौल, लोकेश(2011), शिक्षा अनुसन्धान का कार्य,विकास प्रकाशन।

कौशल, अैम.आर (1976) शिक्षा के सिद्धांत,पंजाब सटेर विश्वविद्यालय।

सिंह,आर.के(2007), "अशोक सम्राट के उपदेश" क्लब रोड़, पश्चिम पुरी, नईदिल्ली-110063

डा.धर्मकीर्ति (2002), "बौद्ध का समाजदर्शन" समयक प्रकाशन,दिल्ली।

बौद्ध,शन्ति स्वरूप (2005), "शन्ति मार्ग" बहुजन हीत प्रकासन, नकोदर।

बौद्ध, जुगल किशोर(2005), "बौद्ध धम्म और कर्म का सिद्धांत" समयंक प्रकाशन,दिल्ली।

मिश्रा, जय शंकर (1992), "प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास" दिल्ली प्रकासन,दिल्ली।

आपटे,बी.आर. (2001), 'सम्राट अशोक चरित्र' वदरा प्रकाशन।

डा,धर्मकीर्ति, 'महान बौद्ध दार्शनिक' सम्यक प्रकाशन 32/3, पश्चिमपुरी नई दिल्ली-110063

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies